आदमी का चेहरा

HSSLIVE.IN

कविता

कुंवर नारायण

लेखक के बारे में:

श्री कुंवर नारायण का जन्म उत्तर प्रदेश के फैजाबाद में हुआ। कविता के अलावा कहानी, समीक्षा और सिनेमा में भी उन्होंने लेखनी चलाई। देश का विकास मेहनत करनेवाले मज़दूर, किसान आदि पर निर्भर रहता है। लेकिन कभी-कभी देश के उत्थान में उसकी भूमिका भूल जाते हैं। ऐसी याद दिलानेवाली एक छोटी कविता पढ़ें.....

(I) "कुली!" पुकारते ही .....चेहरा याद आया।

(1) समानार्थी शब्द कविता से चुनकर लिखें।

चकित होना - चौंकना बोझ उठाना - लादना माल - सामान
लादना - ढ़ोना सिलवाना - टँकाना

(2) कुली पुकारने पर कवि का अंदर क्यों चौंका?

आज कवि ने अपना सामान खुद उठाया। माल ढोने में जो दर्द है उसे कवि ने पहचान लिया। इसलिए 'कुली' शब्द सुनते ही कवि का अंदर चौंका।

(3) कुली पुकारते समय कौन कवि के पास आकर खड़ा हो गया?

एक आदमी।

(4) कुली को आदमी के रूप में पहचानने से पहले उसके साथ कवि की यात्रा कैसी थी?

कवि के सामान लादकर कुली आगे बढ़ाते समय कवि उससे दस कदम पीछे चलता था।

(5) कुली को आदमी के रूप में पहचानने से पहले कवि क्यों उससे दस कदम पीछे चलता रहा?

कवि स्वाभिमानी थे। उसे लगता है कि वह कुली से श्रेष्ठ है। इसलिए कवि हमेशा दस कदम पीछे चलता रहा।

(6) **कवि क्यों कूली को आदमी के रूप में नहीं पहचान लिया?**

कवि स्वाभिमानी थे। उसे लगता है कि वह 'कुली' से श्रेष्ठ है। इसलिए वह कुली को आदमी के रूप में नहीं पहचान लिया।

(7) कुली को आदमी मानने के पहले कवि ने उसको कैसे पहचानता था?

उसकी लाल कमीज़ पर टँका नंबर से ही पहचानता था।

(8) सामान खुद उठाते वक्त कवि के दिमाग में कौन-सा विवेक पैदा हुआ?

सामान खुद उठाते वक्त कवि को आदमी का चेहरा याद आया। उसने माल ढ़ोनेवाले मनुष्य का दर्द पहचान लिया। काम करने में जो महत्व है उसे पहचान लिया।

(9) कुली कहकर पुकारने पर कवि को क्यों लगता है कि कुली नहीं एक इनसान आकर उसके पास खड़ा हो गया है?

अपनी यात्राओं में कवि कभी भी कुली के चेहरे की पहचान नहीं किया। उसके कमीज़ में टँके नंबर से ही उसे पहचानता था। लेकिन अब कवि को अपना सामान खुद उठाने का अवसर मिला। कवि को माल ढ़ोने का दर्द पहचान लिया। उस पहचान में कवि ने कुली को आदमी के रूप में पहचान लिया।

DO NOT COPY

(10) सामान खुद उठाते वक्त कवि ने क्या पहचान लिया?
आदमी का चेहरा पहचान लिया।

HSSLIVE.IN

(11) 'एक आदमी का चेहरा याद आया।' किसको? कब?
कवि को। अपने सामान स्वयं उठाते वक्त उसे एक आदमी का चेहरा याद आया।

(12) सामान खुद उठाते वक्त कवि क्यों आदमी का चेहरा पहचान लिया?
सामान खुद उठाते वक्त कवि को माल ढ़ोने का दर्द और परिश्रम का महत्व पहचान लिया। इसलिए कवि 'कुली' को आदमी के रूप में पहचान लिया।

आस्वादन टिप्पणी:

श्री कुंवर नारायण नई कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। कविता के अलावा कहानी, समीक्षा और सिनेमा में भी उन्होंने लेखनी चलाई। 'आदमी का चेहरा' आपकी एक छोटी कविता हैं, जो एक कठोर यथार्थ की ओर इशारा करता हैं कि काम का महत्व केवल उस पर ही निर्भर नहीं रहता बल्कि काम करनेवालों की इमानदारी पर भी निर्भर रहता हैं। हर काम का अपना-अपना महत्व हैं।

अपनी यात्राओं में कवि अपने सामान उठाने केलिए 'कुली' को पुकारते हैं। कुली सामान उठाकर चलते समय कवि अपने को श्रेष्ठ और कुली को अपने से तुच्छ समझकर उससे दस कदम पीछे चला। अपने यात्राओं में वह कभी भी कुली की तरफ़ नहीं देखा। उसके चेहरे की पहचान नहीं किए। उसकी लाल कमीज़ पर टंके नंबर से ही वह उसे पहचानते थे। लेकिन जब जीवन में पहली बार अपना सामान उठाने का अवसर मिला तो कवि ने माल ढ़ोने में जो दर्द और कष्टता पहचान लिया। तभी वह कुली का चेहरा पहचान लिया। परिश्रम का महत्व पहचान लिया।

आज के भाग-दौड़ में आदमी, अपने सहजीवियों को पहचानने में असमर्थ रहता हैं। यहाँ कवि स्वयं अपने को श्रेष्ठ माना। लेकिन नौकर हो या मालिक, दोनों मनुष्य ही है। कवि एक सत्य की ओर इशारा करता है कि मनुष्य को उसी रूप में पहचानना हैं।

परीक्षा केंद्रित कुछ और प्रश्न। इनके उत्तर स्वयं लिखने का प्रयास करें:

(1) कुली सामान उठाकर जाते समय कवि हमेशा कुली से पीछे चसता था। दु:खी कवि अपने डायरी में इसके बारे में लिखते है। डायरी का वह पन्ने तैयार करें।

(2) अपना माल उठाते वक्त कवि ने मान ढ़ोने का दर्द और आदमी का चेहरा पहचान लिया। उस दिन में कवि ने डायरी में क्या लिखा होगा। कल्पना करके लिखे।

(3) कुली के आदमी के रूप में पहचानने के बाद कवि और कुली के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

HSSLIVE.IN

(4) कवि कभी भी कुली के चेहरे का पहचान नहीं किया। वह केवल उसकी लाल कमीज़ पर टंके नंबर से ही उसे पहचाना था। रेलवे स्टेशन में माल ढ़ोनेवाले सभी कुली की अवस्था यही है। इस में दुखित दो कुलियों के बीच का संभावित वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(5) कुली को आदमी के रूप में पहचानने के बाद घर पहुँचकर कवि अपनी पत्नी से उस कुली के बारे में कहते हैं, जो हमेशा अपना सामान उठाता था। कवि और पत्नी के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(6) रेलवे स्टेशन जैसे जगहों में यात्रियों के सामान और परिहास का बोझ उठानेवाले ऐसे कुलियों के बारे में एक समाचार अगले दिन की दैनिकी में आते हैं। वह समाचार तैयार करें।

(7) वर्ष कई बीत जाने पर कवि आत्मकथा लिखने की तैयारी में है। वह उस कुली के बारे में भी लिखने की कोशिश में है। वह आत्मकथांश तैयार करें।

(8) किसी भी देश की उन्नति तन-तोड़ मेहनत करके जनता को अन्न दिलानेवाले किसान, मज़दूर आदि पर निर्भर है। लेकिन हम लोग ऐसे किसानों और मज़दूरों की मेहनत और ईमानदारी पहचानने में असमर्थ रहा। इस अवसर पर "काम के महत्व" के बारे में एक निबंध तैयार करें।

(9) वर्तमान सामाजिक परिस्थिति से "आदमी का चेहरा" कविता कैसे जुड़ा है। काम-धंधे के महत्व एवं काम करनेवालों की ईमानदारी पर ध्यान रखकर कविता का आस्वादन टिप्पणी तैयार करें।

HSSLIVE.IN

DO NOT COPY